

अन्य हितधारकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम 'बाँस एवं बेंत: संरक्षण से सतत उपयोग की ओर'

Training of Other Stakeholders on 'Bamboo & Rattan: From Conservation to Sustainable Utilisation'



22 - 24th September 2026

ICFRE - BRC, Aizawl

कृपया अपना संस्करण चुनें/ Please choose your version

हिन्दी संस्करण

English Version

Organized by:

I.C.F.R.E.-Bamboo & Rattan Centre, Aizawl, Mizoram
(A unit of I.C.F.R.E.-R.F.R.I., Jorhat, Assam)

Sponsored by:

Ministry of Environment, Forests & Climate Change
Government of India

संक्षिप्त विवरण

आयोजन का नाम	अन्य हितधारकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम 'बाँस एवं बेंत: संरक्षण से सतत उपयोग की ओर'
तिथि	22.09.2026 to 24.09.2026
अवधि	3 दिन
कार्यक्रम का स्थान	सम्मेलन कक्ष, अतिथि गृह, आईसीएफआरई-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल, मिजोरम
प्रतिभागियों की संख्या	30
भाग लेने वाली संस्था	छात्र एवं शोधार्थी, गैर-सरकारी संगठन एवं स्वैच्छिक संस्थाएँ, प्रकृति एवं ईको-क्लब, पंचायतें एवं निर्वाचित प्रतिनिधि, बैंकिंग संस्थानों के कार्मिक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रेस एवं मीडिया, बाँस एवं बेंत उत्पादक एवं कारीगर, पर्यावरण कार्यकर्ता
आयोजन करने वाली संस्था	भा.वा.अ.शि.प. – बाँस एवं बेंत केंद्र, बेथलहम वेंगथलांग, आइजोल, मिजोरम
अनुदान देने वाली संस्था	पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार
मुख्य अतिथि	श्री एच. लालरेम्तुआंगा, महापौर, आइजोल नगर निगम

विस्तृत विवरण

भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र (ICFRE-Bamboo and Rattan Centre), आइजोल द्वारा दिनांक 22 से 24 सितंबर 2026 तक आइजोल में "बाँस एवं बेंत: संरक्षण से सतत उपयोग की ओर" विषय पर तीन दिवसीय अन्य हितधारकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training of Other Stakeholders) सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें छात्र एवं शोधार्थी, गैर-सरकारी संगठन एवं स्वैच्छिक संस्थाएँ, प्रकृति एवं ईको-क्लब, पंचायतें एवं निर्वाचित प्रतिनिधि, बैंकिंग संस्थानों के कार्मिक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रेस एवं मीडिया, बाँस एवं बेंत उत्पादक एवं कारीगर तथा पर्यावरण कार्यकर्ता शामिल थे।

दिवस-1 (22.09.2026)

श्री संदीप यादव, वैज्ञानिक-डी, प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल, मिजोरम तथा पाठ्यक्रम निदेशक (Course Director) ने सभी प्रतिभागियों एवं विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री एच. लालरेम्लुआंगा, महापौर, आइजोल नगर निगम (AMC) एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित करते हुए स्थानीय बाँस एवं बेंत कारीगरों को सहयोग प्रदान करने में भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बाँस एवं बेंत क्षेत्र के सतत विकास एवं संवर्धन के लिए आधुनिक तकनीकों को पारंपरिक मिजो शिल्पकला के साथ एकीकृत करने के महत्व पर विशेष बल दिया।

उद्घाटन सत्र का समापन श्री अरुण सुकुमारन, वैज्ञानिक-बी, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने वित्त पोषण एजेंसी, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल के प्रमुख, मुख्य अतिथि, प्रतिभागियों, संसाधन व्यक्तियों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन एवं संचालन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

उद्घाटन सत्र के उपरांत तकनीकी सत्रों का शुभारंभ डॉ. हंस राज, वैज्ञानिक-ई, CoE-SLM, ICFRE-देहरादून द्वारा “बाँस एवं बेंत का प्रवर्धन, संरक्षण एवं सतत उपयोग” विषय पर एक ज्ञानवर्धक प्रस्तुति के साथ हुआ।

अपराह्न सत्र में श्री राफेल अस्कोली, वास्तु अभियंता एवं संस्थापक, Blue Temple ने “म्यांमार में बाँस से निर्माण: स्थानीय सामग्री से आवश्यक अवसंरचना तक” विषय पर प्रस्तुति दी। इसके पश्चात एर. जोसांगलियाना राल्ते, सहायक अभियंता, बाँस विकास एजेंसी (BDA), आइजोल ने “बाँस क्षेत्र में बाँस विकास एजेंसी (BDA), मिजोरम की भूमिका” विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। तत्पश्चात श्री हर्षद कुरवारे, सहायक निदेशक, शाखा MSME-DFO, आइजोल ने “मिजोरम में बाँस, बेंत एवं ग्रामीण विकास क्षेत्र में MSMEs की भूमिका” विषय पर प्रस्तुति दी।

प्रथम दिवस के तकनीकी कार्यक्रम का समापन डॉ. आर. के. कलिता, वैज्ञानिक-एफ, ICFRE-RFRI, जोरहाट द्वारा “बाँस एवं बेंत: पूर्वोत्तर भारत में आजीविका सृजन हेतु हरित संसाधन” विषय पर प्रस्तुति के साथ हुआ।

दिवस-2 (23.09.2026)

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन सभी प्रतिभागियों एवं समन्वयकों के लिए लेंगपुई स्थित मिजोरम बाँस केंद्र तथा सैरांग स्थित बाँस प्रौद्योगिकी पार्क, मिजोरम का क्षेत्र भ्रमण आयोजित किया गया।

भ्रमण के दौरान श्री लालरेम्पुइया फनाई, जिला उद्यान परामर्शदाता तथा श्री जेरी लालरेम्पुई, फील्ड वर्कर ने बाँस आधारित विभिन्न गतिविधियों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा व्यावहारिक प्रदर्शन किए। इनमें बाँस की स्थायित्व बढ़ाने हेतु उपचार तकनीक, वास्तुकला में बाँस के अनुप्रयोग, बाँस की कलात्मक अभिव्यक्तियाँ तथा ऊर्जा उत्पादन एवं आजीविका संवर्धन हेतु बाँस अपशिष्ट का उपयोग शामिल था।

इस क्षेत्र भ्रमण से प्रतिभागियों को बाँस के विविध अनुप्रयोगों तथा इसके सतत उपयोग की संभावनाओं के संबंध में महत्वपूर्ण व्यावहारिक एवं प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

दिवस-3 (24.09.2026):

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन की शुरुआत विभिन्न उद्यमियों द्वारा साझा की गई सफलता की कहानियों से हुई, जिसमें उन्होंने बाँस एवं बेंत क्षेत्र में अपने अनुभवों, कार्यों एवं उपलब्धियों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया।

इसके पश्चात श्री लालदिनलियाना छांगते, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO), King Industries, आइजोल ने "मिजोरम के प्राकृतिक संसाधन एवं उनका मूल्य संवर्धन" विषय पर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. कार्मेलिता लालछनहिमी पचुआउ, उप निदेशक एवं परियोजना अधिकारी, उद्यान विभाग, मिजोरम सरकार ने "मिजोरम में बाँस क्षेत्र के विकास में राज्य बाँस मिशन की भूमिका" विषय पर प्रस्तुति दी। इसके पश्चात सुश्री लालथानपुई ह्लामते, एसोसिएट प्रोफेसर, गवर्नमेंट सेरछिप कॉलेज ने "चयनित खाद्य बेंत प्रजातियाँ: *C. flagellum* एवं *C. acanthospathus* – विभिन्न मृदा उपचारों के अंतर्गत अंकुरण की प्रवृत्ति" विषय पर प्रस्तुति दी।

अपराह्न सत्र में श्री दिनेश कुमार मीणा, वैज्ञानिक-ई, ICFRE-RFRI ने "क्षरित भूमि के पुनर्स्थापन हेतु एक संभावित प्रजाति के रूप में बाँस: कोयला खदान भूमि पुनर्स्थापन का एक केस अध्ययन" विषय पर एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी।

तकनीकी सत्रों का समापन श्री संदीप यादव, वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल द्वारा "पूर्वोत्तर भारत में बाँस एवं बेंत संसाधन" विषय पर प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने इस क्षेत्र में बाँस एवं बेंत संसाधनों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी एवं अंतर्दृष्टि साझा की।

तकनीकी प्रस्तुतियों के उपरांत प्रतिभागियों के विचार प्राप्त करने तथा उनके समग्र प्रशिक्षण अनुभव का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से प्रतिभागी मूल्यांकन एवं फीडबैक सत्र आयोजित किया गया।

इसके पश्चात समापन सत्र (Valedictory Session) आयोजित किया गया, जिसमें श्री संदीप यादव, वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों एवं महत्वपूर्ण उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के प्रमाण-पत्र श्री संदीप यादव, वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र तथा श्री दिनेश कुमार मीणा, वैज्ञानिक-ई, ICFRE-RFRI द्वारा वितरित किए गए।

मुख्य अतिथि श्री एच. लालरेम्तुआंगा, महापौर, आइजोल नगर निगम, मिजोरम सरकार



“ मैं इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए भा.वा.अ.शि.प.-बाँस एवं बेंत केंद्र, आइजोल के प्रति अपनी हार्दिक सराहना एवं आभार व्यक्त करता हूँ तथा बाँस एवं बेंत शिल्प पर अपनी आजीविका निर्भर रखने वाले कारीगरों के लिए केंद्र द्वारा किए जा रहे निरंतर प्रयासों की प्रशंसा करता हूँ। बाँस एवं बेंत की कला मिजो संस्कृति में गहराई से रची-बसी है। अतः पारंपरिक शिल्पकला के साथ आधुनिक तकनीकों का समन्वय इस क्षेत्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक कदम है। ”

पहले दिन की झलकियाँ



चित्र १: अ-ह: उद्घाटन सत्र की झलकियाँ

दूसरे दिन की झलकियाँ



चित्र २: अ-ह: क्षेत्र भ्रमण की झलकियाँ

तीसरे दिन की झलकियाँ



A



B



C



D



E



F



G



H

चित्र 3: अ-ड: तकनीकी सत्र की झलकियाँ; इ-ह: विदाई सत्र

प्रिंट मीडिया कवरेज

दिनांक: 23.09.2026

अखबार: वांग्लैनी, आइजोल



[Home](#)
[Editorial](#)
[Guest Writer](#)



Mau hman ñangkai dan zirna buatsaih

23rd September, 2026

Sorkar laipua Ministry of Environment, Forest and Climate Change bultumin nimin khan ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Aizawlah 'Bamboo & Rattans: From Conservation to Sustainable Utilisation' tih hmangin zirhona buatsaih a ni a, Aizawl mayor H Lalremtluanga'n a hmanpui.

Training hi mau leh hruihnâng hman ñangkai dan te, humhalh leh a hlutna tipung thiam tura kawng inkawhmuahna tur niin, ni thum chung buatsaih a ni dawn a; thiamhnâng deha eizawng te, tlawmngai pawl aiawh te, zirlai te, zirbingmi (research scholar)-te leh mau chingtute an tel. Training-a telte chu Mizoram

Bamboo Centre, Lengpui leh Bamboo Technology Park, Sairang te tlawhpui an ni ang.

Aizawl Mayor chuan, ICFRE-BRC chu mau leh hruihnâng hmanga eizawngte chawi kânaah an thawh hlawk hle tih sawiin, "Mau leh hruihnâng te hi Mizo hnam nunphungah a bet tlat a, tunlai thiamna hman ñangkai chung zela tlo zawk leh ña zawka thil siam chhuak tura hmalak zel a pawimawh," a ti.

ICFRE-Bamboo and Rattan Centre-a scientist-D Sandeep Yadav pawhin thu sawiin, mau leh hruihnâng hmanga eizawna kawng ña zawk siam dan leh hman ñangkai dan ngêlnghet zawk mipuiin an neih theihna tura ICFRE-BRC hmalak dante a sawi a ni.

प्रिंट मीडिया कवरेज

दिनांक: 23.09.2026

अखबार: न्यूज़लिक, आइजोल

Bamboo, rattan training seeks to sharpen Mizoram artisans' market edge

Staff Reporter

Aizawl, Sept 22: From traditional craft to market-ready products, a three-day training programme in Aizawl is focusing on helping bamboo and rattan artisans improve skills, product quality and value addition while promoting sustainable use of the resources.

The programme, organised by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (BRC) with support from the Union Ministry of Environment, Forest and Climate Change, began on Monday and will continue till September 24.

Bamboo artisans, farmers, students, research scholars and NGO representatives are taking part in the training, which covers sustainable utilisation, conservation, product development and value addition.

Aizawl Municipal Corporation Mayor H. Lalremtlunga, who inaugurated the programme, said bamboo and rattan were closely linked to Mizo culture and livelihoods. He urged local artisans to focus on quality products that could develop a distinct identity for Mizoram in wider markets.

ICFRE-BRC head Sandeep Yadav said the programme was aimed at building skills and creating greater livelihood opportunities through bamboo- and rattan-based activities.

The programme also includes discussions on conservation and responsible resource use, with organisers stressing the potential of bamboo and rattan as sustainable materials for environmentally responsible livelihoods.

Brief Summary

Name of Event	Bamboo & Rattans: From Conservation to Sustainable Utilisation. Training of Other Stakeholders
Date(s)	22.09.2026 to 24.09.2026
Duration	03 Days
Venue	Conference Hall, Guest House, ICFRE-BRC, Aizawl, Mizoram
No. of Participants	30
Participating Agency(s)	Students and Research Scholars, NGOs & Voluntary Organisations, Nature & Eco-clubs, Panchayats & Elected Representatives, Banking Institution Personnel, Social Activists, Press & Media, Bamboo & Rattan Growers & Artisans, Environmental Activists
Organising Agency(s)	ICFRE-Bamboo & Rattan Centre, Bethlehem Vengthlang, Aizawl, 796008, Mizoram
Funding Agency(s)	Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India
Chief Guest	Shri H. Lalremtluanga, Mayor, Aizawl Municipal Corporation

Detailed Description

The **ICFRE-Bamboo and Rattan Centre** successfully organised a three-day Training of Other Stakeholders on "Bamboo & Rattan: From Conservation to Sustainable Utilisation" in Aizawl from **22nd to 24th September, 2026**.

Sponsored by the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Govt. of India, the training welcomed 30 participants, including Students and Research Scholars, NGOs & Voluntary Organisations, Nature & Eco-clubs, Panchayats & Elected Representatives, Banking Institution Personnel, Social Activists, Press & Media, Bamboo & Rattan Growers & Artisans, and Environmental Activists.

DAY -1 (22.09.2026):

Mr Sandeep Yadav, Scientist-D, Head, ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Aizawl, Mizoram, and Course Director, extended a warm welcome to all the participants and distinguished guests.

Addressing the gathering, **Mr H. Lalremtlunga**, Mayor, Aizawl Municipal Corporation (AMC), and Chief Guest of the training programme, highlighted the significant role of ICFRE-BRC, Aizawl, in supporting local bamboo and rattan artisans. He emphasised the importance of integrating modern techniques with traditional Mizo craftsmanship to promote the sustainable development and growth of the bamboo and rattan sector.

The inaugural session concluded with a vote of thanks proposed by **Mr Arun Sukumaran**, Scientist-B, ICFRE-BRC, Aizawl. He expressed gratitude to the funding agency, Head, ICFRE-BRC, Aizawl, the Chief Guest, participants, resource persons, and all those involved in organising and supporting the training programme.

Following the inaugural session, the technical sessions commenced with an insightful presentation by **Dr Hans Raj**, Scientist-E, CoE-SLM, ICFRE-Dehradun, on "Propagation, Preservation and Sustainable Utilisation of Bamboo and Rattan."

In the afternoon, **Mr Raphael Ascoli**, Architectural Engineer and Founder of Blue Temple, delivered a presentation on "Building with Bamboo in Myanmar: From Local Material to Essential Infrastructure." This was followed by **Er. Zosangliana Ralte**, Assistant Engineer, Bamboo Development Agency (BDA), Aizawl, who discussed "The Role of Bamboo Development Agency (BDA), Mizoram in the Bamboo Sector." Subsequently, **Mr Harshad Kurware**, Assistant Director, Branch MSME-DFO, Aizawl, presented on "The Role of MSMEs in Bamboo, Rattan and Rural Development Sector in Mizoram."

The technical programme for the first day concluded with a presentation by **Dr R. K. Kalita**, Scientist-F, ICFRE-RFRI, Jorhat, on "Bamboo and Rattan: Green Resources for Livelihood Generation in Northeast India."

DAY-2 (23.09.2026):

On the second day of the training programme, a field visit was organised for all participants and coordinators to the Mizoram Bamboo Centre in Lengpui and the Bamboo Technology Park in Sairang, Mizoram. During the visit, **Mr Lalrempuia Fanai**, Horticulture Assistant, and **Mr Jerry Lalrempuia**, Circle Division Officer, provided detailed explanations and practical demonstrations of various bamboo-based activities. These included bamboo treatment techniques for improved durability, architectural applications, bamboo artistry, and the utilisation of bamboo waste for energy generation and livelihood support. The visit provided participants with valuable practical exposure to the diverse applications and sustainable utilisation of bamboo.

DAY-3 (24.09.2026):

The final day of the training commenced with a series of success stories shared by entrepreneurs, highlighting their experiences and achievements in the sector. This was followed by a presentation by **Mr Laldinliana Chhangte**, CEO, King Industries, Aizawl, on "Natural Resources of Mizoram and Their Value Addition."

The programme continued with a session by **Dr Carmelita Lalchhanhimi Pachuau**, Deputy Director and Project Officer, Department of Horticulture, Government of Mizoram, who delivered a presentation on "The Role of State Bamboo Mission in Development of Bamboo Sector in Mizoram." Subsequently, **Ms Lalthanpuii Hnamte**, Associate Professor, Government Serchhip College, presented on "Selected Edible Rattans: *C. flagellum* and *C. acanthospathus* – Germination Pattern under Different Soil Treatments."

In the afternoon, **Mr Dinesh Kumar Meena**, Scientist-E, ICFRE-RFRI, delivered an engaging presentation on "Bamboo as a Potential Species for Degraded Land Restoration: A Case Study of Coal Mine Land Restoration." The technical sessions concluded with a presentation by **Mr Sandeep Yadav**, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC, Aizawl, who shared valuable insights on "Bamboo and Rattan Resources of Northeast India."

Following the technical presentations, a Participants' Assessment and Feedback Session was conducted to gather participants' views and evaluate their overall training experience. This was followed by the Valedictory Session, during which **Mr Sandeep Yadav**, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC, Aizawl, presented a concise overview of the activities and key highlights of the three-day training programme. The programme concluded with the distribution of training completion certificates to all participants by **Mr Sandeep Yadav** and **Mr Dinesh Kumar Meena**, Scientist-E, ICFRE-RFRI.

Chief Guest

Shri H. Lalremtluanga, Mayor Aizawl Municipal Corporation, Government of Mizoram



“ I extend my sincere appreciation to ICFRE-BRC, Aizawl, for organising this significant event, and commend their ongoing contributions to artisans whose livelihoods depend on bamboo and rattan crafts. Bamboo and rattan artistry is deeply embedded in Mizo culture, making the integration of modern techniques with traditional craftsmanship a vital step forward for the sector. ”

Glimpses of Day 1



Figure 1: A-H: Glimpses of Day 1

Glimpses of Day 2



Figure 2: A-H: Glimpses of Field visit

Glimpses of Day 3



A



B



C



D



E



F



G



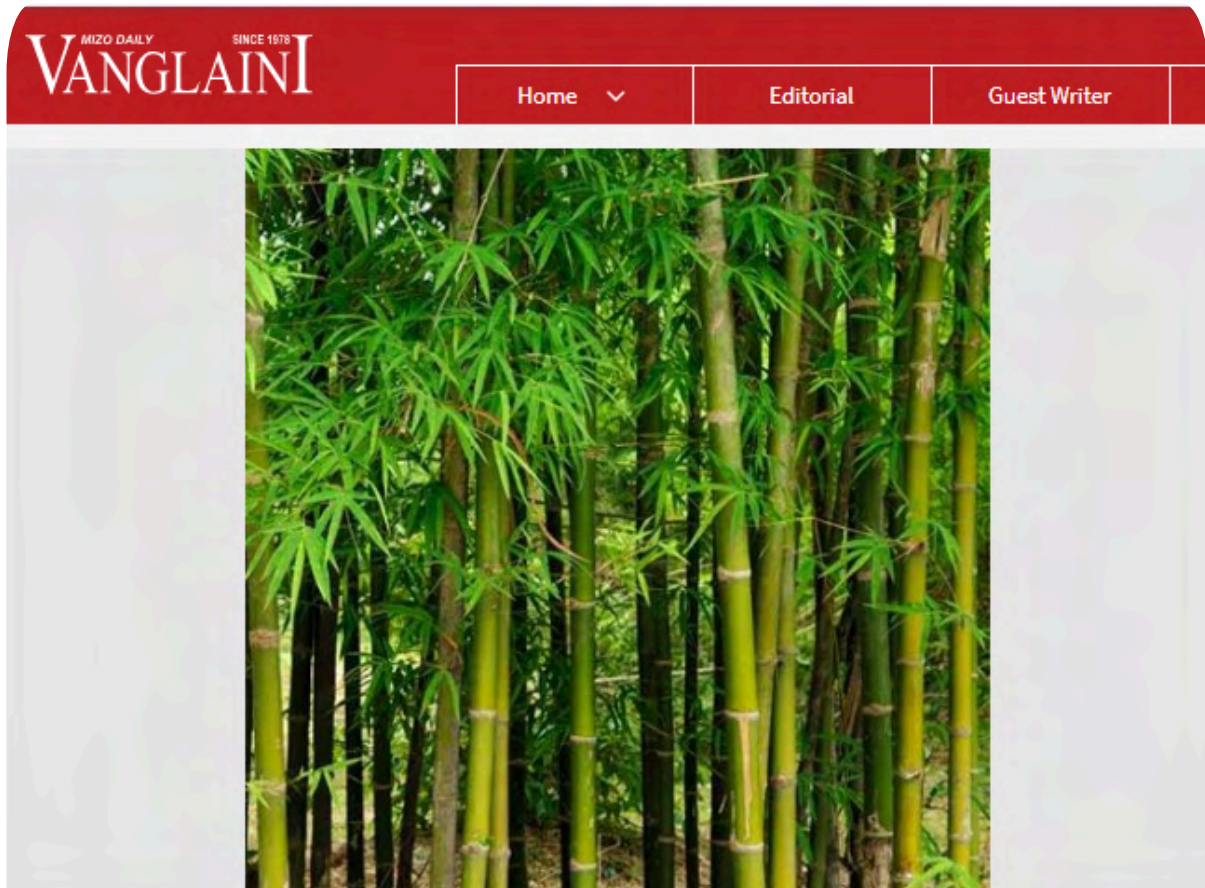
H

Figure 3: A-F: Glimpses of Technical Session; G-H: Valedictory Session

Print Media Coverage

Date: 23.09.2026

Newspaper: Vanglaini, Aizawl



Mau hman t̃angkai dan zirna buatsaih

23rd September, 2026



Sorkar laipua Ministry of Environment, Forest and Climate Change bultumin nimin khan ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Aizawlah 'Bamboo & Rattans: From Conservation to Sustainable Utilisation' tih hmangin zirhona buatsaih a ni a, Aizawl mayor H Lalremtluanga'n a hmanpui.

Training hi mau leh hruihnāng hman t̃angkai dan te, humhalh leh a hlutna tipung thiam tura kawng inkawhlmuhna tur niin, ni thum chhung buatsaih a ni dawn a; thiamhnāng deha eizawng te, tlawmngai pawl aiawh te, zirlai te, zirbingmi (research scholar)-te leh mau chingtute an tel. Training-a telte chu Mizoram

Bamboo Centre, Lengpui leh Bamboo Technology Park, Sairang te tlawhpui an ni ang.

Aizawl Mayor chuan, ICFRE-BRC chu mau leh hruihnāng hmanga eizawngte chawi kannaah an thawh hlawk hle tih sawiin, "Mau leh hruihnāng te hi Mizo hnam nunphungah a bet tlat a, tunlai thiamna hmang t̃angkai chung zela tlo zawk leh t̃ha zawka thil siam chhuak tura hmalak zel a pawimawh," a ti.

ICFRE-Bamboo and Rattan Centre-a scientist-D Sandeep Yadav pawhin thu sawiin, mau leh hruihnāng hmanga eizawna kawng t̃ha zawk siam dan leh hman t̃angkai dan ngêlnghet zawk mipuiin an neih theihna tura ICFRE-BRC hmalak dante a sawi a ni.

Print Media Coverage

Date: 23.09.2026

Newspaper: NEWSLINK, Aizawl

Bamboo, rattan training seeks to sharpen Mizoram artisans' market edge

Staff Reporter

Aizawl, Sept 22: From traditional craft to market-ready products, a three-day training programme in Aizawl is focusing on helping bamboo and rattan artisans improve skills, product quality and value addition while promoting sustainable use of the resources.

The programme, organised by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (BRC) with support from the Union Ministry of Environment, Forest and Climate Change, began on Monday and will continue till September 24.

Bamboo artisans, farmers, students, research scholars and NGO representatives are taking part in the training, which covers sustainable utilisation, conservation, product development and value addition.

Aizawl Municipal Corporation Mayor H. Lalremtlunga, who inaugurated the programme, said bamboo and rattan were closely linked to Mizo culture and livelihoods. He urged local artisans to focus on quality products that could develop a distinct identity for Mizoram in wider markets.

ICFRE-BRC head Sandeep Yadav said the programme was aimed at building skills and creating greater livelihood opportunities through bamboo- and rattan-based activities.

The programme also includes discussions on conservation and responsible resource use, with organisers stressing the potential of bamboo and rattan as sustainable materials for environmentally responsible livelihoods.